Hemant Lal Ghritlahare

Hindi Literature

गुरू घासीदास का युगीन परिदृश्य और उनका सामाजिक संघर्ष

डॉ. गोकर्ण दुबे एवं हेमन्त पाल घृतलहरे

घासीदास ने गुरू के पद को समाज में सर्वोच्च और वंशानुगत घोषित किया तथा अन्य किसी का भी पांव छूने से मना कर दिया। गुरू को छोड़कर शेषजन आपस में समान है, वे एक दूसरे को 'सतनाम' कहकर अभिवादन करते है। समाज के सभी सांस्कारिक क्रियाओं को ब्राम्हण ही सम्पन्न कराता था। परन्तु घासीदास ने इसे अस्वीकार करते हुए इसका भार गुरू को सौप दिया। आज भी सतनामी अपने किसी सांस्कारिक क्रिया को ब्राम्हण से नहीं कराते बल्कि गुरू उन्हें सम्पन्न कराता है।

गुरू घासीदास का जन्म सन् 1756 में माघ मास की पूर्णिमा तिथि दिनांक 18 दिसम्बर की प्रातः बेला में वर्तमान रायपुर जिले के बलौदाबाजार तहसील में गिरौद नामक छोटे से ग्राम में मंहगू के पुत्र के रूप में अमरौतिन की कोख से हुआ था।

सन् सत्तरह सौ छप्पन लिखित, माघ पुन्नी शशिवार।

अमरौतिन के लालभयो, बाढ़ो सुख अपार।। [1]

जब घासीदास 5 माह के हुए तभी अमरौतिन का स्वर्गवास हो गया। [2] अमरौतिन के तीन बेटे थे - ननकू, मनकू, घासी।

मंहगूदास को पत्नी के वियोग में काफी दुःख हुआ। बच्चों का देखरेख करते-करते उनकी रोजी मजदूरी का काम छूट गया। करूणा नाम की बाल विधवा से उन्होंने पुनर्विवाह किया जिससे मंहगू को दो पुत्र हुए- गंगा और जोगी। [3]

बचपन से ही घासीदास का स्वभाव अन्य बालकों से हटकर था। मनोहर दास नृसिंह के अनुसार-

ग्यारह वर्ष के भये कुमारा। शुद्ध सरल चित्ता परम उदारा।।

आलस्य ईर्षा काहु नहीं करही। रहहि एकान्त मौन मन गहही।।

इस तरह "होनहार बिरवान के, होत चीकने पात" वाली कहावत उन पर चरितार्थ होती है।

सोलह वर्ष की उम्र में उनका विवाह सफुरा नाम की कन्या से हुआ जो सिरपुर ग्राम के अंजोरी दास की पुत्री थी। [4]

गुरू घासीदास की पांच सन्तानें थी- सुभद्रा, अमरदास, बालकदास, आगरदास, एवं अड़गढ़िया दास।

युगीन परिदृश्य :- उस समय धार्मिक कट्टरता, छूआछूत, ऊंचनीच की भावना भारतीय समाज में परिव्याप्त थी। जिसमें एक बहुत बड़े वर्ग का जीवन घुट-घुट कर रह गया था। निम्न जातियों का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शारीरिक शोषण किया जाता था।

" ब्राम्हण जातियाँ काफी पवित्रता कारक तथा प्रभावी और अछूत जातियाँ काफी अपवित्रता कारक मानी जाती थी। अछूतों का स्पर्श तो क्या, इनकी छाया पड़ना तक अपवित्राकारी माना जाता था। सत्कासीन जातियों ने निम्न जातियों को निम्नतर व्यवसायों एवं अछूत स्थिति में बनाए रखने की कोशिश की।" [5]

डॉ. हीरालाल शुक्ल ने "गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिंद्धांत"(1995) के पेज 12 में लिखा है-

"न्याय नाम की कोई चीज नही थी। जातियों के आधार पर अपराधियों का वर्गीकरण होता था। उदाहरण के लिए यदि कोई ब्राम्हण किसी शुद्र का वध कर देता तो ज्यादा से ज्यादा उसको जुर्माना होता था। ठीक इसके विपरीत यदि कोई शुद्र ब्राम्हण का वध करता, तो उसे प्राणदण्ड दिया जाता था"

खेत माल गुजार की सम्पति होती थी। किसी व्यक्ति का किसी खेत पर स्थायी अधिकार नही होता था। खेतों पर काम करने वाले लोग केवल खेतिहर मजदूर हुआ करते थे।

घासीदास के पूर्व छत्तीसगढ़ क्षेत्र में कलचुरियों का राज्य था। अंतिम कलचुरि सामन्त मोहन सिंह को हटाकर बिम्बाजी भोंसला (1758-1787) छत्तीसगढ़ के शासक बने।

छत्तीसगढ़ में मराठों सूबदारों का प्रशासन 31 वर्षो (17887-1818) तक था। इसी अवधि में घासीदास युवावस्था से वृद्धावस्था में घोर पीड़ा से गुजर रहे थे। अराजकता की स्थिति से सपूर्ण छत्तीसगढ़ अवसाद ग्रस्त था। [6]

उस समय छत्तीसगढ़ में जादू, टोने, कर्मकाण्ड एवं अंधविश्वास चरम सीमा पर था। प्रत्येक गांव में बैगा होता था। प्रत्येक पर्वत, नदी, ग्राम, घर कुल के अलग-अलग देवी-देवता होते थे। इनके दैवी प्रकोप से बचने के लिए पशु-पक्षियों एवं मानवों की भी बलि दी जाती थी।

" गांव में यदि कोई आकस्मिक मौत हो जाती, तो उसके पीछे किसी आत्मा का हाथ माना जाता था। अजीर्ण रोग का मतलब था कि किसी दुष्टात्मा की नजर लग गई है। परिवार में जब कोई हादसा होता, तो माना जाता था कि उस घर में प्रेमात्मा का वास है और उस घर को हमेशा के लिए छोड़ दिया जाता था। " [7]

टोनही एवं संतान के नाम पर स्त्रियों का शारीरिक शोषण होता था उन्हें शारीरिक यातनाएं दी जाती थी।

धर्म के ठेकेदार धर्म छोड़ चुके थे मठ-मंदिर, महाजनी के अड्डे बन गए थे। धर्म के नाम पर नरबलि जैसी कुप्रथा थी। पशुबलि तो आम बात थी। तंत्र-मंत्र की साधना का विकृत रूप टोनही तथा बैगा आदि का गांवों में आतंक व्याप्त था। धर्मस्थल व्यभिचार के अड्डे बन गए थे। मद्य,मांस का सेवन समाज में आम बात थी। [8]

मराठा शासकों, आलसी, अकर्मण्य, महत्वकांक्षी जमीदारों एवं पिण्डारी आदि लुटेरों ने छत्तीसगढ़ को पूरी तरह लूट लिया था।

राजा या सामन्त किसी भी जाति की बहू का उपभोग पहले खुद करता था। उसके उपभोग के बाद ही उसका पति उपभोग कर सकता था। [9]

सिद्धान्त एवं उपदेश :- बुद्ध के समान सम्बोधि को उपलब्ध होने के बाद घासीदास ने जो संदेश (उपदेश), सिद्धान्त, वाणियों दी वह उनके जीवन भर की त्याग-तपस्या और अनुभव का निचोड़ था।

घासीदास की 42 वाणियों (उपदेश) और सात सिद्धांतों की मान्यता को सभी लेखक एक स्वर से स्वीकार करते है।

उनकी सात शिक्षाएं **(सिद्धान्त)** सतनाम-दर्शन के प्रमुख आधार स्तंभ है-

डॉ. गोकर्ण दुबे प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष-हिन्दी, डी. पी. विप्र महावि. बिलासपुर (छ.ग.)
हेमन्त पाल घृतलहरे, प्राचार्य, संत शिरोमणि गुरू घासीदास महावि. पामगढ़ (छ.ग.)

PRINCIPAL
Govt Naveen Girls College
Baikunthpur, Korea (C.G.)

Scanned by CamScanner

1. - मूर्ति पूजा मत करो।

2. - मानव मानव एक समान है। जाति भेद मत मानो।

3. - पराई स्त्री को माता जानों।

4. - अपरान्ह (दोपहर के बाद) खेतों में हल मत चलाओं। गाय और भैंस को हल में न जोतो।

5. - शराब व मादक पदार्थों का सेवन मत करों।

6. - मांस और उसकी समानता रखने वाले पदार्थों का सेवन मत करो।

7. - सत्य ही ईश्वर है। एक मात्र सतनाम की उपासना करो।

ये सिद्धान्त आज के समय में अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी, अनुकरणीय और प्रासंगिक है। सामाजिक क्रांति :- '' जब हम सामाजिक क्रांति की बात करते है तो इसका तात्पर्य, विद्रोह, बगावत, बलवा, तोड़-फोड़ या सैनिक बगावत, राजनीतिक विद्रोह और गदर आदि नही होता, बल्कि सामाजिक क्रांति का अर्थ होता है -परम्परागत सामाजिक व्यवस्था में होने वाले मूलभूत परिवर्तन से, जिसमे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप परिवर्तित होकर नवीन रूप धारण कर लेता है।''(10)

घासीदास अपने युग की सामाजिक विषमता से अत्यंत क्षुब्ध थे। अपने बंधुजनो के प्रति किए जा रहे अन्याय, अत्याचार और अपमान से बहुत दुःखी थे। अपने जीवन के कटु व लम्बे अनुभव से वह सारे षड्यंत्र को समझ चुके थे।

'' आखिरकार उन्होने 1820 ई. में '' पूर्ण सामाजिक समानता'' का नारा दिया था तथा अन्याय और अत्याचार से निपटने के लिए दृढ़ प्रजिज्ञ हो गए। भारतीय इतिहास में यह एक सबसे बड़ी उलट-पुलट थी। जिससें जाति व्यवस्था का पारम्परिक ढांचा ही लड़खड़ाने लगा।''(11)

चीशोल्म (1868 : 45)(12) ने इसे ''सामाजिक क्रांति'' कहा है। यह क्रांति 1820 1830 तक सतनाम आन्दोलन के रूप में चली थी।

ग्राण्ट (1870 : Cxxix) (13) के अनुसार - '' सदियों के सामाजिक दमन से मुक्ति पाने के लिए घासीदास ने जो सिद्धान्त आविष्कृत किए थे अत्यंत परिष्कृत थे। अतीत के सभी निंदामूलक विशेषणों को उन्होने पूरी तरह से दफन कर दिया''

जातिभेद पर कुठाराघात करते हुए उन्होने सामाजिक एकता पर बल दिया। इससे गरीब, दलित, शोषित वर्ग एकजुट होने लगा। और समूचा हिन्दू समाज इनके विरूद्ध हो गया। छत्तीसगढ़ में आन्दोलन की स्थिति निर्मित हो गई।

''गुरू घासीदास इन सबसे डरने के बजाय निर्भय होकर अकेले ही अपने तीन लाख अनुयायियों के साथ मोर्चा लेते रहे। लम्बें संघर्ष के बाद इनकी 'हीनभावना' दूर हुई और उन्होने दूसरी जातियों की सम्प्रभुता को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया।''(14)

'' घासीदास ने मनु की बनाई हुई सामाजिक वर्ण व्यवस्था को ही उलट-पुलट दिया उनके उपदेशों से समाज में नई चेतना और क्रांति घटित हुई।

दलितों ने अपने आपको ब्राम्हण घोषित कर दिया और ब्राम्हणों को अस्पृश्य माना। ऊपर की चीजें नीचें आ गई और नीचें की चीजें ऊपर। (15)

दलित उच्च जाति यथा राजपूतों की बोली का अनुकरण भय के कारण नही कर सकते थे कि कही उच्च जाति के लोग उन से नराज न हो जाए। यहां तक कि वे उच्च जाति के व्यक्ति के पास भी नही जा सकते थे।

"A Shudra was Prohibited by the severest penalties from approaching with in a certain distance of a member of any higher castes. (16)

गुरू घासीदास ने इस व्यवस्था को तोड़ दिया अब उनके अनुयायी बराबर में बात करने लगें यदि उन्हे गालियां दी जाती तो बदले में वे भी ऐसा ही करते।

छत्तीसगढ़ की जनता निरक्षर थी छल एवं दबाव पूर्वक सामन्तों, मालगुजारों एवं प्रशासकों ने उनसे उनकी जमीनें छीन ली थी जिसके प्रमाण थे किसानों के ऋण पत्र एवं साहूकार व मालगुजारों के कागजात। इन्हे के भय दिखाकर वे शोषण करते थे। दलित अच्छी तरह समझ चुके थे कि उनके नारकीय जीवन के लिए ये कागजात अत्याधिक जिम्मेदार है।

'' जब वह घोर निराशा की स्थिति में पहुंची तो उसने जमीदारी, साहूकारी तथा सरकारी प्रभुत्व की साधन लिखित सामग्री को ही जला डाला जिनमे बंधक पत्र, दस्तावेज, पट्टा, रेहननामा, खाता, खतौनी तथा फाइलें थी।''(17)

शुक्ल (1995 : 109) ने दलितों की अशिक्षा का कारण जमीदार व सवर्णों को मानते हुए लिखा है - कि वे इस बात के लिए विशेष सावधान थे कि दलितों और शोषितों को पाठशाला में प्रवेश न मिले।(18)

परन्तु घासीदास ने उच्च आदर्शों, सिद्धान्तो एवं विचारों के द्वारा उनमें बौद्धिक चेतना व तर्क का विकास किया जिससे ये निरक्षर होते हुए भी जागरूक, संगठित और संघर्षशील बने रह सके।

मनु की व्यवस्था में ब्राम्हण सर्वोच्च था फिर क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की स्थिति निम्न व दयनीय थी। दलित दूर से धरती को छूकर सवर्णों को प्रणाम करते और सिर नीचा करके चलते थे। वे कमर के ऊपर नंगे रहने को विवश थे।

घासीदास ने गुरू के पद को समाज में सर्वोच्च और वंशानुगत घोषित किया।''(19) तथा अन्य किसी का भी पांव छूने से मना कर दिया। गुरू को छोड़कर शेषजन आपस में समान है, वे एक दूसरे को 'सतनाम' कहकर अभिवादन करते है।

समाज के सभी सांस्कारिक क्रियाओं को ब्राम्हण ही सम्पन्न कराता था। परन्तु घासीदास ने इसे अस्वीकार करते हुए इसका भार गुरू को सौप दिया। आज भी सतनामी अपने किसी सांस्कारिक क्रिया को ब्राम्हण से नही कराते बल्कि गुरू उन्हें सम्पन्न कराता है।

घासीदास के समय शूद्रों या दलितों को समान आसन पर बैठने का अधिकार नही था, वे सवर्णों से नीचे ही बैठते थे। परन्तु घासीदास ने इस व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया। तुलसीदास ने लिखा है -...

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।(रामचरित मानस)

उस काल में दलितों को कठोर शारीरिक यातनाएं, अर्थदण्ड व मृत्युदण्ड दिया जाता था। शारीरिक यातना की जो व्यवस्था मनु ने मनुस्मृति में दी थी उसे सुनकर भी रूह कांप जाती है।इन भयानक यातनाओं से समाज डरा, सहमा, मूक, पशुवत हो गया था।

पहली बार घासीदास ने उन्हें निडरता, साहस, आत्मसम्मान और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया और अन्याय का विरोध करने का आदेश दिया। प्रतिरोध न करने पर दण्ड का विधान था "A Satnami is put out of caste if he is beaten by a man of another caste " (20)

उस समय हिन्दू जातियां दलितों से

PRINCIPAL
Govt.Naveen Girls College
Baikunthpur, Korea (C.G.)

Scanned by CamScanner

छुआछूत का भेदभाव करती थी। सार्वजनिक स्थल उनके लिए प्रतिबंधित थे। लोग उनके हाथ का पानी तक ग्रहण नही करते थे।

इसके लिए घासीदास ने उल्टा नियम बनाया ताकि पलड़ा सम पर आ सके। "पंथ का यह नियम था कि किसी भी जाति हिन्दू या मुसलमान के हाथों पकाया हुआ भोजन सतनामी कभी ग्रहण न करें। कच्चा भोजन लेकर स्वतः पकाये। (21)

ग्राण्ट (1870) के अनुसार ये अपनी जाति से बाहर के लोगों का छुआ पानी भी नही पीते थे।

राजा महराजा ही उस काल में ऐंठी हुई ऊपर की ओर उठी मूछ रख सकते थे । निम्न जातियों को यह अधिकार न था। "जब गुजरात के धनाढ्य तथा राजनैतिक रूप से अधिक ताकतवर पाटीदारों ने गांव के एक बरई मजदूर की मूंछे तनी हुई देखी तो पहले उसकी मुछो को मुड़ा दिया और बाद में पीटते हुए गांव से निकाल दिया।"(22)

. इस प्रथा के प्रत्युत्तर में सतनामियों ने ऐंठी हुई ऊपर की ओर मुड़ी हुई राजपूतों जैसी मंछे रखी।

अछूतों की महिलाएं हीरे-जवाहिरात नही पहन सकती थी (शुक्ल 1995 : 116)। रसेल तथा हीरालाल (द्वितीय खण्ड 1916 : 249) - गांवों में उच्च जाति के व्यक्ति के घर के सामने से गुजरते समय जूते उतार लिए जाते थे।

सतनामी महिलाएं अब नथनी पहनने लगी जो कि पहले केवल राजघराने की औरतें ही पहन सकती थी। सतनामी अब धोती के साथ कुर्त्ता भी पहनने लगें तथा सिर पर पगड़ी भी बांधने लगे। ऊंची जाति के लोगो के सामने भी वे अब जूता-चप्पल पहनने लगें।

हाथी की सवारी एवं छत्र का विधान राजा या सामन्त के लिए ही हो सकता था।

लेकिन घासीदास ने इस परम्परा को तोड़ते हुए छत्र के साथ हाथी की सवारी की । बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहनकर गुरू जब शोभयात्रा पर निकलते थे तब हाथियों पर सवार होते थे। उनके साथ घोड़े एवं ऊंट की सवारी भी होती थी।

ऊंची जाति के लोग सुन्दर सुसज्जित घर बनाते है। अतः घासीदास ने भण्डार में भव्य इमारत का निर्माण कराया जिसमें सोने के कलश और कंगूरे लगवाए।(23)

गुरू घासीदास ने सबसे पहले अपने स्वयं की कमियों और बुराइयों को दूर कर स्वयं को योग्य बनाने के लिए कहा ताकि बाहरी बुराईयों से वीरता पूर्वक लड़ा जा सके। उन्होने सरल, जनमानस, की छत्तीसगढ़ी भाषा में उपदेश, प्रवचन दिए जो लोगों के हृदय को छूकर तदाकार, तदनुरूप, अंगीकृत हो गए।

रसेल तथा हीरालाल (1916, प्रथम खण्ड 315) के अनुसार सतनामी आन्दोलन के फलस्वरूप दलितों ने कृषकदासता या गुलामी की प्रथा को पूरी तरह उखाड़ फेका था। उन्होने उन अकाक्षांओ को भी जड़मूल से विनष्ट का दिया, जो उन्हे दास बनाए रखना चाहती थी।(24)

घासीदास ने बलि प्रथा, हिंसा, धार्मिक, ढोंग-ढकोसलों, पितृमोक्ष मनाना, राम-राम कहना, शनि राहु, केतु के ग्रह नक्षत्रों में पड़ना छोड़कर अपने अधिकार के लिए लड़ना सिखाया। सामाजिक समानता एवं समरसता उनका उद्देश्य था। उनका कहना था कि मुझे स्वर्ग या धरती का राज्य नही चाहिए मै तो केवल सामाजिक समानता चाहता हूं।

जिस समय रूढ़ि-वदिता, धर्मान्धता, कट्टरता, का बोलबाला था, छत्तीसगढ़ अंचल वनों एवं प्रस्तरों से आच्छादित था, सत्ताासीन लोग परम शत्रु थे ऐसे प्रतिकूल, हिंसक, अमानवीय, क्रूर, बर्बर युग में सदियों से अमानवीय संत्रास झेल रहे भारतीय दलित शोषित वर्ग को अमानवीय यातनाओ की बेड़ियां काटकर मानवता के खुले वातावरण में सांसे लेने की आजादी एक निपट निरक्षर ग्रामीण मजदूर घासीदास जैसे साधारण व्यक्ति ने दिलाई यह विश्व के इतिहास में अत्यंत असाधारण घटना थी। घासीदास की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्रांति (1820-30) ने ही घासीदास को असाधारण व्यक्तित्व में रूपान्तरित कर लोक नायक - जनमानस चितेरा-दलित नेता, प्रातः स्मरणीय, विश्ववंदनीय, गुरू घासीदास बना दिया। <u>उनके कार्य एवं उपदेश आज की आवश्यकता है।</u>

<u>संदर्भ सूची :-</u>

1. श्री गुरू घासीदास नामायण - मनोहर दास नृसिंह द्वितीय संशोधित संस्करण 2001 आदिकाण्ड दोहा-36 पेज 42
2. वही पेज 49 दोहा - 45-46
3. वही पेज 112 दोहा - 141, 142
4. वंही पेज 117 दोहा - 151
5. हिन्दू समाज और ज़ाति व्यवस्था-इरावती कर्वे (अनुवादक-गोपाल भारद्वाज) नई दिल्ली 1975 पेज (79)
6. गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत- डॉ. हीरालाल शुक्ल (म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल) 1995 पेज 8
7. वही पेज- 32
8. वही पेज- 34
9. वही पेज- 25
10. यूनीफाइड समाजशास्त्र (प्रथम वर्ष)- ए. पी. श्रीवास्तव (रामप्रसाद एण्ड संस, भोपाल) पेज-243
11. गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत- डॉ. हीरालाल शुक्ल (भोपाल) 1995- पेज 129
12. Report on the land Revenue Settlement of the Bilaspur District in the Central Provinces - J. W. Chisolm (Nagpur) 1868 page 45
13. The Gazetteer of Central Provinces- Charles Grant (Bombay) 1870page . c xxix
14. गुरू घासीदास: संघर्ष समन्वय और सिद्धांत डॉ. हीरालाल शुक्ल (भोपाल) 1995 पेज 129
15. वही पेज - 86-87
16. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India- Russell and R. B. Hiralal (London) 1916, Reprint 1975 (Delhi) vol I
17. गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत - डॉ. हीरालाल शुक्ल (भोपाल) 1995 पेज 109
18. वही
19. A History of Hindu Civilisation during British Rule vol. I (Religious Condition)- Pramatha Nath Bose (Asian Publication Services New Delhi) 1982 पेज 118
20. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India - R. V. Russell and R.B. Hiralal Londan (1916), Reprint 1975 (Delhi) vol . I page - 314
21. वही
22. गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत - डॉ. हीरालाल शुक्ल (भोपाल) 1995 पेज 116
23. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India Russell and R. B. Hiralal (London) 1916, Reprint 1975 (Delhi) vol I page 311
24. वही पेज - 315

PRINCIPAL
Vaikunthpur, Korea (C.G.)
Scanned by CamScanner